साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 2, अंक 34, अप्रैल(प्रथम), 2018

चैन का पंछी

डॉ० राम गरीब 'विकल'

खोजती रहती हैं आँखें
बावरी सी,
चैन का पंछी,
कहीं तो खो गया है।

जोर, दीपक ने
बहुत था आजमाया,
नेह की,
अन्तिम घड़ी तक टिमटिमाया।
रात मावस की
रही उपहास करती,
बादलों ने,
साथ में था सुर मिलाया।
अजनबी सब,
कौन, किसका हाथ थामे,
राह में कोई,
अँधेरा बो गया है।

मुँह चिढ़ातीं रोज,
ये घर की दरारें,
खण्डहर में,
क्यों भला आयें बहारें ।

सिर ढँकें तो,
पैर बाहर भागता है,
लाज को, रूमाल से
कब तक सँवारें।
बेरहम सावन, निगोड़ा
अब न भाये,
आँसुओं से, चित्रपट ही
धो गया है।

है कली शंकित,
भ्रमर पर वर्जनाएँ,
भैरवी की,
लुप्त हैं सम्भावनाएँ ।
मनचली पछुआ,
ठिठोली कर रही है,
हम, प्रभा की आरती
कैसे सजाएँ?
देखते ही केतु को,
रथ मोड़ बैठा,
दोपहर में ही,
दिवाकर सो गया है।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें